

इक्कीसवीं सदी का गंगावतरण

युग सन्धि, भावी सम्भावनाएँ
और उज्ज्वल भविष्य का विज्ञान

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

रात्रि

बीते 300 वर्षः
भौतिकवाद और
अवांछनीयताओं का
अन्धकार

युग सन्धि

(1989-2000)

सन्धि बेला:
दोहरी प्राकृतिक प्रक्रिया

अवांछनीयताओं
का समापन

सत्प्रवृत्तियों
का सम्वर्धन

अरुणोदय

21वीं सदी:
उज्ज्वल भविष्य
का बीजारोपण

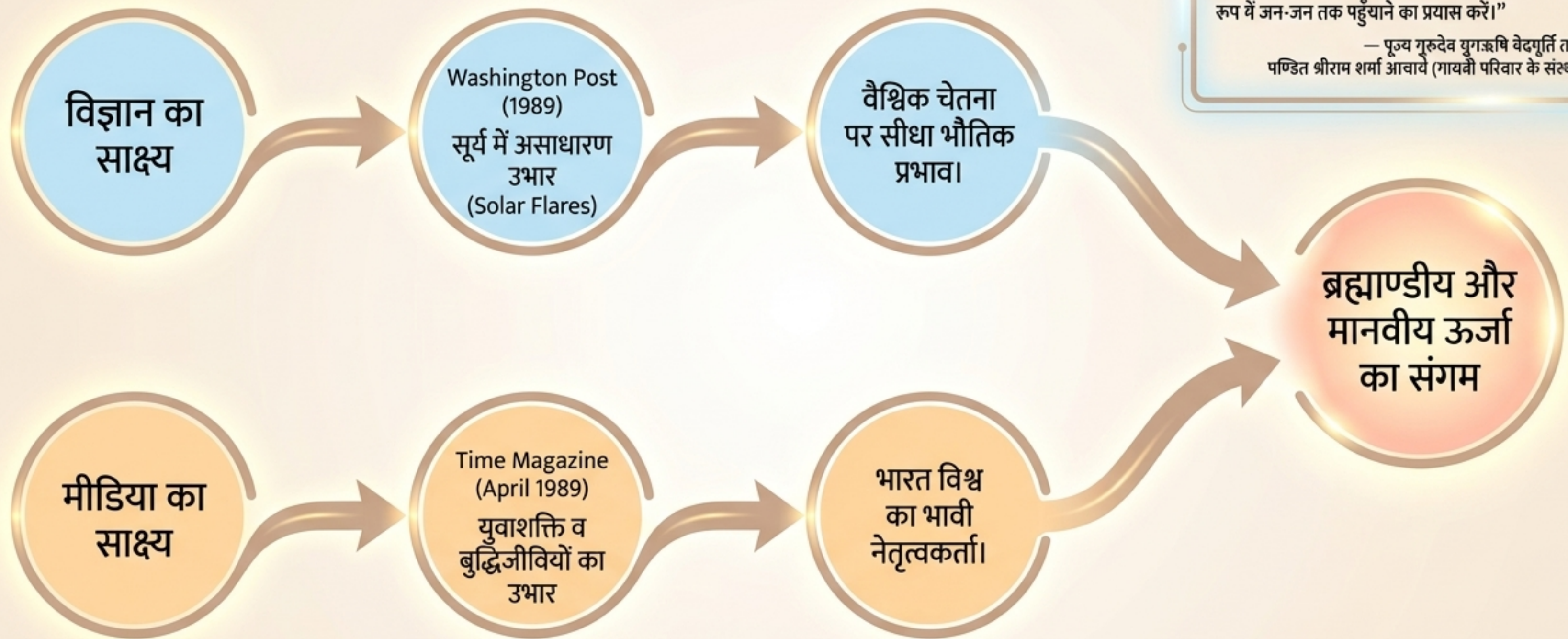
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-
जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित
श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

भौतिकवाद
का अतिवाद
(300 वर्षों की उद्वण्डता)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए।
“असो आम सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगत्रयि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रकृति अतिवाद सहन नहीं करती।
21वीं सदी गन्दगी की सफाई और
शाश्वत सौजन्य की वापसी का समय है।

नियंत्रण और सन्तुलन
(प्रकृति का शाश्वत नियम)



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदगुरुति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

द्वितीय विश्वयुद्ध
की निराशा

चर्चिल का 'V for
Victory' नारा

निराशा की हार,
मित्र राष्ट्रों की जीत।

मनोवैज्ञानिक ऊर्जा का प्रवाह:
सकारात्मक संकल्प ही संकट
का अचूक उपाय है।

300 वर्षों के दुरुपयोग
से उपजी आशंका

'21वीं सदी—उज्ज्वल
भविष्य' का उद्घोष

मनोबल का जागरण,
आध्यात्मिक नवसृजन।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना
और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित
शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य
के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

शान्तिकुञ्ज: 21वीं सदी की आध्यात्मिक गंगोत्री

हिमालय की छाया, सप्तऋषियों की तपस्थली

युगसन्धि
महापुरश्चरण

विचार क्रान्ति
अभियान

लोकसेवियों
का सृजन

वैश्विक जनमानस का परिष्कार





अकेला
भगीरथ

कठोर तप

भौतिक गंगा
का धरती पर
अवतरण

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन
के बीच में पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे कहियेगा —
बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान
शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य
के रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगक्रषि
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

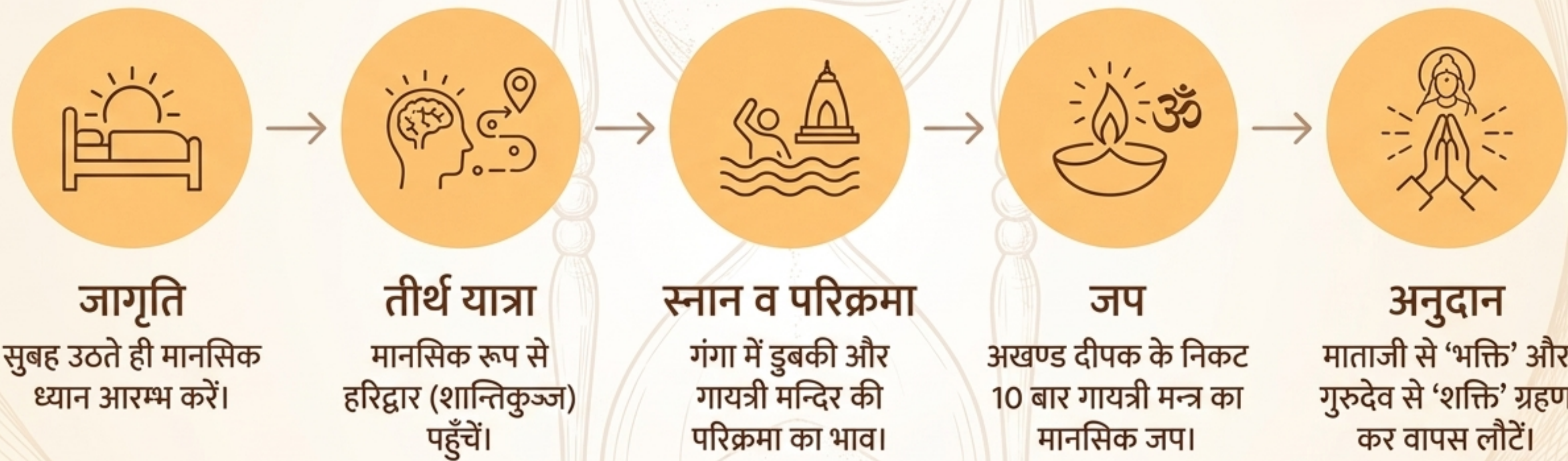
दैवी मार्गदर्शन
(शान्तिकुञ्ज)

लाखों युग
शिल्पी

ज्ञान गंगा का
जन-जन तक
अवतरण

उद्देश्य: वैचारिक प्रदूषण और आस्था संकट का निवारण।

आम जन के लिए 5 मिनट की संजीवनी



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वर्ष 2001
की पूर्णाहुति

100 वर्षों
तक का प्रभाव

देव संस्कृति
को नवजीवन

1 करोड़ साधकों
की एकनिष्ठ ऊर्जा

जब एक लक्ष्य के लिए विशाल जनसमूह की ऊर्जा
एकत्रित होती है, तो परिणाम चमत्कारिक होते हैं।

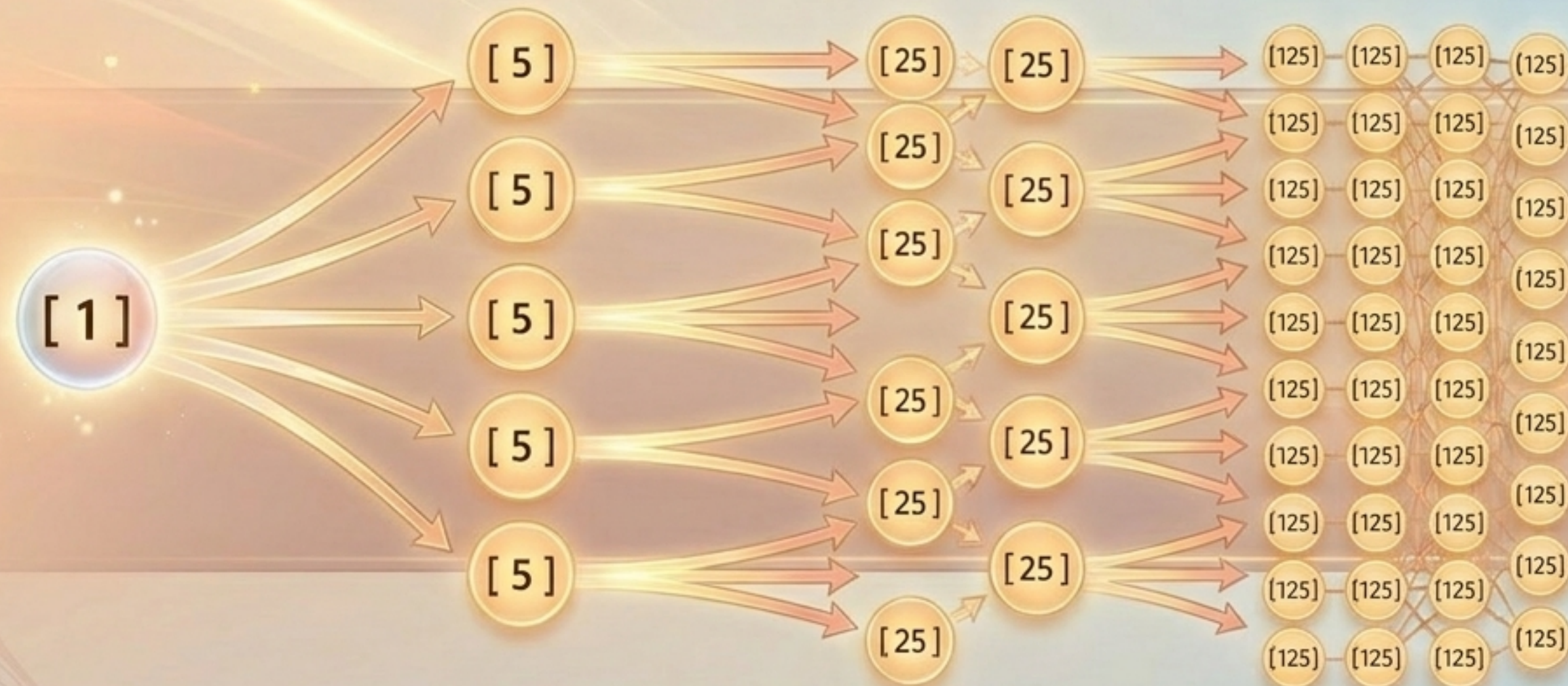
1989

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

लोकसेवियों का उत्पादन: वानप्रस्थ परम्परा का पुनर्जीवन



लक्ष्य: 1 लाख समर्पित युगशिल्पी।
हर एक व्यक्ति 5 नए प्रज्ञावानों को जाग्रत करने का भार उठाएगा।



1000 आम्र उद्यान = पूरा क्षेत्र 'हजारीबाग' बन गया

प्रचण्ड लगन

प्रश्न योग्यता या सुविधा का नहीं, लगन का है।
एक व्यक्ति सम्पूर्ण क्षेत्र का इतिहास बदल सकता है।

एक साधारण किसान
(सीमित साधन)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ गोलाकार पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

दैवी सत्ता

महाकाल का सूत्र संचालन
और समय की पुकार।

विचार क्रान्ति

ज्ञान गंगा और युग साहित्य
द्वारा जनमानस का परिष्कार।

व्यक्तिगत आहुति

समयदान, अंशदान और
5 मिनट की संजीवनी साधना।

समग्र क्रान्ति का ब्लू-प्रिंटः
नव सृजन और उल्लास से भरा उज्ज्वल भविष्य

नव सृजन में ऐतिहासिक भागीदारी का सौभाग्य

**आप
(YOU)**

नियमित उपासना व समयदान

दीप यज्ञ व विचार गोष्ठी

क्रान्तिधर्मी साहित्य का
जन-जन तक विस्तार

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।

ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहेंकि येरे ज्ञान शरीर साहित्य के
रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव सुगङ्गवि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

सफलता महाकाल द्वारा सुनिश्चित है, किन्तु
इसमें सम्मिलित होना हमारा परम सौभाग्य है।